आ०सी०एस०ई० बोर्ड के अनुसार पत्र (औपचारिक और अनौपचारिक)का प्रारूप

औपचारिक पत्र का प्रारूप

१.आरंभ-

पृष्ठ के बायीं ओर अपना पता।
दिनांक
सेवा में,
.....संबंध,
.....विभाग,
.....शहर।
विषय-संक्षिप्त रूप में।
संबोधन (महोदय,मान्यवर,माननीय)

२.पत्र की मुख्य विषय-वस्तु।

३.पत्र का अंत- पत्र के अंत में धन्यवाद देकर,बायीं ओर पत्र लिखने वाला अपने संबंध के अनुरुप शब्द लिखकर अपना नाम लिखता है।जैसे-आपका आज्ञाकारी शिष्य,भवदीय,प्रार्थी आदि।
धन्यवाद।
भवदीय नाम।
(प्रधानाचार्य को.....पत्र का खाका थोड़ा भिन्न।(इसमें पत्र के समापन में बायीं ओर छात्र का नाम,कक्षा,वर्ग,दिनांक आदि दिया जाता है)

पत्र का प्रकार	संबंध	संबोधन	अभिवादन	समापन
औपचारिक पत्र	अपरिचित व्यक्ति के लिए,प्रधानचार्य, अध्यक्ष,अधिकारी महोदय,पुस्तक विक्रेता,प्रकाशक	महोदय,श्रीमानजी, मान्यवर माननीय, आदरणीय	इन पत्रों में नमस्ते अथवा प्रणाम आदि नहीं लिखते	भवदीय,विनीत, आपका आज्ञाकारी, प्रार्थी,आपका स्नेह भाजन

उदाहरण के तौर पर औपचारिक पत्र:

आपके मोहल्ले में बच्चों के खेलने के लिए किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं है।नगर निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखकर एक बाल उद्यान बनवाने की प्रार्थना कीजिए।

५बी,आदर्श नगर
कोलकाता-७०००२०
३०.१०.२०१७

सेवा में
उपायुक्त महोदय
कोलकाता नगर निगम
आज़ादपुर
कोलकाता-७०००२०

विषय-पार्क विकसित करने के संबंध में।

महोदय
इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान आदर्श नगर के निवासियों की ओर से अपने क्षेत्र में एक पार्क विकसित करवाने की प्रार्थना के संबंध में आकृष्ट करना चाहता हूँ।
मान्यवर,आदर्श नगर एक ऐसा क्षेत्र है,जहाँ एक भी ऐसा पार्क नहीं है जिसमें बच्चे खेल सकें।यद्यपि यहाँ पार्कों के लिए दो स्थान छोड़े गए हैं तथापि वे दोनों आजकल कूड़े-कचरे से भर गए हैं।लोग इन खाली स्थानों पर अपने घरों का कूड़ा-करकट फेंक देते हैं,जिनमें से बदबू भी आती रहती है।क्षेत्र के निवासियों को आशंका है कि यदि ये दोनों स्थान कुछ समय तक ओर इसी प्रकार खाली पड़े रहे तो इन पर झुग्गी-झोपड़ियाँ बन जाएँगी तथा बाद में उन्हें हटाना भी मुश्किल हो जाएगा।साथ ही यदि इन पर कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों ने कब्जा करना शुरु कर दिया,तो फिर यह प्रक्रिया रुकने का नाम नहीं लेगी और इस क्षेत्र के निवासी पार्क की जगह से हाथ धो बैठेंगे।
आपसे अनुरोध है कि इस समस्या को अत्यंत गंभीरता से लें और तत्काल इन दोनों स्थानों पर पार्क विकसित करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दें।
धन्यवाद।

भवदीय
राजेंद्र गुप्ता

अंक योजना
पत्र के प्रारूप के लिए-३० प्रतिशत
पत्र की विषय वस्तु - ७० प्रतिशत

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

१.आरंभ- पृष्ठ के बायीं ओर अपना पता,
भेजने वाले का पता व तिथि।जैसे-
राजीव
89,गुरु नगर,
करनाल।
18 नवंबर,20....अथवा 18-11-20.....।
परीक्षा भवन से पत्र लिखते समय पते के स्थान पर परीक्षा भवन तथा शहर का नाम लिखना चाहिए।जैसे-
परीक्षा भवन,
.....शहर।
तिथि.....

२.संबोधन तथा अभिवादन-पत्र लिखते समय संबोधन तथा अभिवादन का बहुत महत्तव होता है।संबोधनों में विशेषण महत्तवपूर्ण होते हैं।जैसे-
पूज्य/पूजनीय दादा जी,
सादर चरण स्पर्श।

३.पत्र की मुख्य विषय-वस्तु- पत्र का मुख्य विषय सहज और स्वाभाविक होना चाहिए।विषय के आरंभ में परिवारजनों का हाल-चाल पूछना चाहिए तथा अंत में उनके लिए उचित आदर अथवा स्नेह प्रकट करना चाहिए।

४.अंत-पत्र में बायीं ओर पत्र भेजने वाला अपनी अवस्था के अनुकूल शब्द लिखकर नीचे अपने हस्ताक्षर करता है।जैसे-आपका प्रिय पुत्र,आपका अनुज,भवदीय,तुम्हारा अभिन्न मित्र आदि।

नाम

संबोधन,अभिवादन तथा पत्र के अंत में लिखे जाने वाले शब्दों का वर्णन।

पत्र का प्रकार	संबंध	संबोधन	अभिवादन	समापन
अनौपचारिक पत्र	अपने से बड़ों के लिए	पूज्य,पूज्यवर,पूजनीय आदरणीय,माननीय	चरण स्पर्श,सादर प्रणाम,नमस्कार	आपका प्रिय पुत्र, आपका आज्ञाकारी पुत्र
	बराबर वालों के लिए	प्रिय मित्र,प्रिय बहन प्रियवर,बंधुवर	स्नेह,नमस्कार,सप्रेम नमस्ते।	तुम्हारा मित्र,आपका अपना,अभिन्न हृदय,तुम्हारा शुभचिंतक
	अपने से छोटों के लिए	प्रिय(नाम) चिरंजीव, आयुष्मान,आयुष्मती, मेरे प्यारे बेटे।	चिरंजीवी रहो,आशीर्वाद, प्रसन्न रहो,सुखी रहो,सस्नेह।	हितैषी,शुभेच्छु

उदाहरण के तौर पर: अनौपचारिक पत्र

आपका मित्र किसी खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विदेश-यात्रा पर जा रहा है।मंगलकामना करते हुए उसे पत्र लिखिए।

मकान न० ३२८
कालका जी एक्सटेंशन
कोलकाता-७०००२०
दिनांक : ३०.१०.१७

प्रिय मित्र सुधीर
मधुर स्मृति।
मुझे कल ही पता चला कि तुम राष्ट्रमंडल युवा जूनियर खेल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए चयनित किए गए हो और जर्मनी जा रहे हो।यह सुनकर मेरी प्रसन्नता का पारावार न रहा।घर में बाकी लोग भी काफ़ी खुश हुए और तुम्हारी सफलता के लिए कामना कर रहे थे।
तुम्हारी बहुत दिनों से विदेश -यात्रा पर जाने की तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिता में भाग लेने की इच्छा थी।मित्र,जहाँ संकल्प दृढ़ हो,वहाँ सफलता अवश्य मिलती है।
मित्र,मेरी दुआ है कि तुम प्रतियोगिता में हर स्तर पर विजयी हो और देश का नाम रोशन करो।
तुम्हारी यात्रा मंगलकारी एवं आनंदमय हो।

तुम्हारा परम मित्र

वीरेश

अंक योजना
पत्र के प्रारूप के लिए- ३०प्रतिशत
पत्र की विषय वस्तु - ७० प्रतिशत